बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के हिंदी अभ्यास शिक्षण की व्यवहारिक समस्याएँ एवं समाधान

तारकेश्वर गुप्ता*

वर्तमान अध्ययन में बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों, जिन्होनें हिंदी विषय में स्नातक या स्नात्कोत्तर की उपाधि ली है, उन्हीं विद्यार्थियों को चयनित किया गया है। प्रतिदर्श के रूप में 13 विद्यार्थियों को लिया गया है, जो एक कॉलेज के बी.एड. पाठ्यक्रम में सम्मिलित 25 विद्यार्थियों में से यादृच्छिक प्रतिदर्श चयन विधि (Random Sampling Method) द्वारा चयनित हैं। अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि (Survey Method) का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के संकलन हेतु अर्द्धसंरचित साक्षात्कार अनुसूची (Semi-Structured Interview Schedule) का सहयोग लिया गया है, साथ ही अभ्यास शिक्षण के समय प्रेक्षण (Observation) द्वारा भी आँकड़ों को संकलित किया गया है। आँकड़ों के सांख्यिकीय परीक्षण हेतु *काई-वर्ग* (X^2) परीक्षण का उपयोग किया गया है। परिणाम में पाया गया कि पाठ-योजना का निर्माण करने, प्रस्तावना प्रश्न बनाने, आत्मविश्वास के साथ शिक्षण करने तथा शिक्षण सहायक सामग्री का निर्माण एवं प्रयोग करने जैसे बिंदुओं पर प्रशिक्षणार्थियों को समस्या उत्पन्न हुई, जबकि व्याख्या लिखने व करने तथा कक्षा में अनुशासन की समस्या नहीं हुई।

प्रस्तावना- 'सा विद्याविमुक्तये' अर्थात् विद्या वह है, जो मुक्ति प्रदान करती है। मनुष्य जीवन की समस्याओं से मुक्ति प्राप्त करने के लिए कई प्रकार की विद्याओं का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक हो जाता है। यद्यपि विद्या जीवन रूपी बंधनों से मुक्ति का साधन है तथापि इस भौतिकतावादी युग में जीवन का बंधन बहुत पीछे छूट जाता है और समस्याओं का बंधन अग्रिम पंक्ति में माना जाने लगा है। इन समस्याओं के समाधान के लिए शिक्षण कार्य एक सम्मानजनक पेशा है। समाज के बहुत-से ऐसे युवा जो अध्यापन कार्य में रुचि रखते हैं वे बी.एड. का प्रशिक्षण लेकर शिक्षण के कौशलों का ज्ञान प्राप्त करते हैं, साथ ही व्यवहार कुशलता एवं आत्मविश्वास में भी वृद्धि करते हैं।

व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की उन्नति का आधार राष्ट्रभाषा हिंदी के शिक्षण की उन्नति

*असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (बी.एड. विभाग) हेमवतीनन्दन बहुगुणा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय खटीमा, उधमसिंह नगर, उत्तराखंड

8-Chapter.indd 85 6/17/2015 10:41:07 AM

है, इस तथ्य को भारत के शिक्षक तथा छात्र जितनी द्रुत गति से पहचान लें उतना ही अच्छा है। क्योंकि राष्ट्रभाषा के विकास एवं व्यवहार के अभाव में सामाजिक विकास का उज्ज्वल पक्ष अधूरा रह जायेगा। भारत का अधिकांश प्रशासक वर्ग, उच्चपदस्थ कर्मचारी वर्ग, दिग्भ्रमित नेतृत्व वर्ग हिंदी की अवमानना में अपनी शान समझता है। अनेक कठिनाईयों एवं बाधाओं को पार करती हुई हिंदी प्रगति पथ पर अग्रसर है। जो भारतीय नागरिक इसके अनुसार चलेंगे, वे भारतीय समाज में सामन्जस्य स्थापित कर सकेंगे, शेष इससे कट जायेंगे।

हिंदी भारतीय समाज के उल्लास और सौन्दर्य की भाषा है, चिन्तन-मनन और भावधारा की भाषा है, साथ ही अन्तर्द्वन्द्व, संघर्ष, उपेक्षा, ग्लानि और पश्चाताप की भी भाषा है। काल्पनिक और जीवन-संग्राम की भाषा में अंतर हो जाता है। भाषा कभी क्लिष्ट होती, कभी सरल, कभी कोमल तो कभी कठोर और कभी भावात्मक तो कभी वैज्ञानिक। हिंदी ने सभी परिस्थितियों में अपनी क्षमता को सिद्ध किया है। परंतु आजकल छात्रों में हिंदी के प्रति रुचि का ह्रास दिखायी पड़ता है। विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों तथा पाठशालाओं में हिंदी के पठन-पाठन की ओर कुछ अन्यमनस्कता, कुछ उपेक्षा, कुछ प्रमाद का भाव दिखाई पड़ता है।

हमारा वर्तमान समाज व राष्ट्र परिवर्तन एवं विकास नाजुक परंतु अत्यन्त महत्वपूर्ण दौर से गुज़र रहा है। ऐसी परिस्थिति में अध्यापक का दायित्व और बढ़ जाता है। अध्यापक ही देश के भावी नागरिकों अर्थात् युवा वर्ग के छात्र-छात्राओं के वास्तविक संपर्क में आता है तथा उन्हें अपने आचार-विचार तथा ज्ञान के अवबोध से प्रभावित करता है। अध्यापकों के ऊपर ही राष्ट्र के भावी निर्माताओं को तैयार करने का दायित्व होता है। समाज की आवश्यकताओं, अपेक्षाओं, आकांक्षाओं, आदर्शों, मूल्यों आदि को वास्तविक रूप देने की ज़िम्मेदारी भी अध्यापकों को ही वहन करनी होती है।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन "समाज में अध्यापक का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को बौद्धिक परंपराओं व तकनीकी कौशलों के हस्तानान्तरण के साधन के रूप में तथा सभ्यता की ज्योति को प्रज्जवलित रखने में सहायता प्रदान करता है।"

हिंदी को समूचे राष्ट्र की वाणी बनने का गौरव प्राप्त है। हिंदी हमारी राष्ट्रीयता का मापदण्ड है। अनेक वर्षों से हिंदी-प्रेम, स्वदेश-प्रेम का अभिन्न अंग माना जाता रहा है और राष्ट्रीयता के रचनात्मक कार्यों में हिंदी प्रचार को प्रमुख स्थान दिया गया था। हिंदी की सेवा राष्ट्र की सेवा है और लोकतंत्र की सेवा है। हिंदी के माध्यम से ही भारतीयता का साक्षात् दर्शन संभव है। भारतीय संविधान ने हिंदी की राष्ट्रव्यापी स्थिति को स्वीकार करके लोकतंत्र में अपनी आस्था व्यक्त की है। हिंदी को कामकाज की भाषा बनाने का दायित्व केवल संविधान का नहीं है। यह तो सम्पूर्ण जनता का कार्य है और इसका सर्वाधिक दायित्व शिक्षित समाज पर है।

छात्रों को हिंदी पर अधिकार हो सके और वे भाषीय कौशलों में दक्षता प्राप्त कर सकें, अध्यापक को इस बात का प्रयत्न करना है कि छात्र शुद्ध उच्चारण कर सकें, शुद्ध वर्तनी लिख सकें, धारा प्रवाह भाषण कर सकें, प्रभावी लेख

लिख सकें, साहित्य की विविध विधाओं से परिचय प्राप्त कर सकें और हिंदी के प्रति अभिष्ट दृष्टिकोण का विकास कर सकें। इसके लिए उसे स्वयं अपने ज्ञान का विकास करना है।

अभ्यास शिक्षण बी.एड. शिक्षण-क्रम का प्रयोगात्मक पहलू है, जिसमें प्रशिक्षणार्थी शिक्षण कला को सीखने का अभ्यास करता है। प्रशिक्षणार्थियों को अभ्यास-शिक्षण से पूर्व सूक्ष्म-शिक्षण (Micro Teaching) का अभ्यास कराया जाता है, जिसमें उन्हें शिक्षण कौशलों (Teaching Skills) को एक-एक करके बताने के पश्चात् उन्हें खुद प्रस्तुत करने का अवसर दिया जाता है। जिसमें प्रशिक्षणार्थी रूचि लेना प्रारंभ करता है और धीरे-धीरे उसका आत्मविश्वास बढ़ता जाता है। सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास के दौरान प्रशिक्षार्णी शिक्षण कला की बारीकियों से अवगत होता है, जो उसे अभ्यास-शिक्षण में सहायता प्रदान करते हैं।

प्रशिक्षणार्थियों को अभ्यास हेतु माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में ले जाया जाता है, जहाँ उन्हें शिक्षण कार्य की स्वतंत्रता प्रदान की जाती है और पर्यवेक्षक द्वारा उसके शिक्षण कार्य का आलोचनात्मक मूल्यांकन किया जाता है। प्रायः प्रेक्षण (Observation) के दौरान यह देखा गया है कि जो प्रशिक्षणार्थी विषय-वस्तु (Content) को तैयार करके कक्षा में पढ़ाता है, उसमें आत्मविश्वास स्पष्ट दिखता है और पर्यवेक्षक (Supervisor) की उपस्थिति में आत्मविश्वास बना रहता है। किन्तु कुछ ऐसे भी प्रशिक्षणार्थी होते हैं कि वे विषय-वस्तु (Content) से हटकर पढ़ाते हैं और पर्यवेक्षक के आते ही उनका आत्मविश्वास का स्तर बिलकुल न्यून हो जाता है। वे घबरा जाते हैं और शिक्षण बाधित हो जाता है। कुछ प्रशिक्षणार्थी ऐसे भी होते हैं जो पहले से किसी विद्यालय में शिक्षण कार्य किये रहते हैं और वे कक्षाओं में पाठ-योजना से हटकर अच्छा पढ़ा लेते हैं किन्तु जब पाठ-योजना के आधार पर पढ़ाने की बात आती है तो उनका भी आत्मविश्वास डगमगा जाता है।

अभ्यास शिक्षण एक ऐसा कार्य है जिसके माध्यम से प्रशिक्षणार्थी शिक्षण के मूलभूत तथ्यों को सीखता है और शिक्षण कौशल का विकास करता है। अभ्यास शिक्षण के समय प्रशिक्षणार्थियों के समक्ष अनेक व्यवहारगत समस्याएँ आतीं हैं, जिनका सामना करना उनके लिए कठिन होता है, फिर भी वे उन समस्याओं से निपटते हैं। अभ्यास शिक्षण के समय प्रशिक्षणार्थियों के समक्ष किन-किन बिन्दुओं पर व्यवहारगत समस्या आती है तथा उन समस्याओं का कारण क्या है एवं उनका समाधान क्या हो सकता है। प्रस्तुत अध्ययन कुछ इसी प्रकार के बिंदुओं पर केंद्रित है।

साहित्य सर्वेक्षण- भार्गव, ए. (2009). ने "टीचिंग प्रेक्टिस फार स्टूडेन्ट-टीचर ऑफ़ बी.एड. प्रोग्राम – इश्यूज़, प्रेडिकमेन्टेस् एंड सज़ेशन्स" शीर्षक के अंतर्गत अपने शोध परिणाम में पाया कि भावी अध्यापक बहुआयामी समस्याओं का सामना करते हैं। जिससे शिक्षण कार्य में आवश्यक अनुभव, कौशल और आत्मविश्वास में कमी आ जाती है। पर्यवेक्षकों ने बताया कि जब वे प्रेक्षण का कार्य प्रारम्भ करते तब वे सक्रिय हो जाते थे। भावी अध्यापकों ने यह स्वीकार किया कि जब पर्यवेक्षक कक्षा में प्रेक्षण हेतु बैठते थे तब वे शिक्षण-पाठ्यवस्तु भूल जाते थे और असहज महसूस करते थे।

अहमद, ए. व अन्य (2010). ने ''टीचिंग प्रेक्टिस – प्राब्लम्स एंड इश्यूज़ इन पाकिस्तान'' शीर्षक के अन्तर्गत अपने शोध परिणाम में पाया कि भावी अध्यापकों को अभ्यास शिक्षण हेतु विद्यालयों में जाने से पूर्व नियमों और अधिनियमों की निर्देशिका उपलब्ध नहीं करायी जाती। पर्यवेक्षकों द्वारा भी पाठ-योजना की पूर्ण तैयारी नहीं करायी जाती थी तथा उनकी प्रभावी भूमिका, आत्मविश्वास में वृद्धि, दृष्टिकोण तथा दक्षता से संबंधित प्रतिपुष्टि भी नहीं दी जाती थी, जिससे उनका अभ्यास शिक्षण कार्य प्रभावित होता था।

रंजन, आर (2013). ने "ए स्टडी ऑफ़ प्रेक्टिस टीचिंग प्रोग्राम – ए ट्रांसलेशन फेज़ फार स्टूडेन्ट टीचर्स" शीर्षक के अन्तर्गत अपने शोध परिणाम में पाया कि भावी अध्यापकों का जो अभ्यास शिक्षण होता है वह अपर्याप्त है। विशेषतया तब जब उनकी तैयारी विद्यालयों में होने वाली परीक्षा से पहले कराई जाती है। उस समय विद्यालयों के अध्यापक अपने विद्यार्थियों को लेकर अत्यधिक संकटग्रस्त रहते हैं। अत: इसी कारण वे अपनी कक्षाओं को छोड़ने के प्रति अनिच्छुक होते हैं, उस दशा में भावी शिक्षकों के अभ्यास शिक्षण का उद्देश्य प्रभावित होता है। भावी शिक्षक सामान्यतया सेवारत् सदस्यों द्वारा असम्मान का भाव महसूस करतें हैं तथा जब उनको विद्यालयों की विभिन्न गतिविधियों में सम्मिलित होने से मना किया जाता है तो उनका उत्साह भंग हो जाता है।

अध्ययन के उद्देश्य – बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के हिंदी अभ्यास शिक्षण के समय उत्पन्न व्यावहारिक समस्याओं का निम्न संदर्भों में अध्ययन करना-

1. बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के हिंदी अभ्यास शिक्षण के समय पाठ-योजना निर्माण में उत्पन्न समस्या का अध्ययन करना।
2. बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के हिंदी अभ्यास शिक्षण के समय प्रस्तावना प्रश्न बनाने में उत्पन्न समस्या का अध्ययन करना।
3. बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के हिंदी अभ्यास शिक्षण के समय व्याख्या लिखने और व्याख्या करने में उत्पन्न समस्या का अधययन करना।
4. बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के हिंदी अभ्यास शिक्षण के समय कक्षा में अनुशासन बनाये रखने में उत्पन्न समस्या का अध्ययन करना।
5. बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के हिंदी अभ्यास शिक्षण के समय शिक्षण कार्य में आत्मविश्वास होने में उत्पन्न समस्या का अध्ययन करना।
6. बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के हिंदी अभ्यास शिक्षण के समय शिक्षण-सहायक सामग्री बनाने और उनका प्रयोग करने में उत्पन्न समस्या का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

1. बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों में पाठ-योजना निर्माण के समय समस्या उत्पन्न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों में और समस्या उत्पन्न न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों के मध्य संबंध है।
2. बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों में व्याख्या लिखते एवं व्याख्या करते समय समस्या उत्पन्न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों में और समस्या उत्पन्न न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों के मध्य संबंध है।
3. बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों में कक्षा में अनुशासन बनाये रखने में समस्या उत्पन्न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों में और समस्या उत्पन्न न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों के मध्य संबंध है।

4. बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों में कक्षा में शिक्षण कार्य में आत्मविश्वास होने में समस्या उत्पन्न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों में और समस्या उत्पन्न न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों के मध्य संबंध है।
5. बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण सहायक सामग्री बनाने एवं प्रयोग करने में समस्या उत्पन्न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों एवं समस्या उत्पन्न न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों के मध्य संबंध है।

शून्य परिकल्पना

1. बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों में पाठ-योजना निर्माण के समय समस्या उत्पन्न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों में और समस्या उत्पन्न न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों के मध्य संबंध नहीं है।
2. बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों में व्याख्या लिखते एवं व्याख्या करते समय समस्या उत्पन्न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों में और समस्या उत्पन्न न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों के मध्य संबंध नहीं है।
3. बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों में कक्षा में अनुशासन बनाये रखने में समस्या उत्पन्न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों में और समस्या उत्पन्न न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों के मध्य संबंध नहीं है।
4. बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों में कक्षा में शिक्षण कार्य में आत्मविश्वास होने में समस्या उत्पन्न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों में और समस्या उत्पन्न न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों के मध्य संबंध नहीं है।
5. बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण सहायक सामग्री बनाने एवं प्रयोग करने में समस्या उत्पन्न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों एवं समस्या उत्पन्न न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों के मध्य संबंध नहीं है।

विधि *(Method)* – प्रस्तुत अध्ययन का प्रारूप सर्वेक्षण *(Survey Method)* पर आधारित है।

प्रतिदर्श *(Sample)* – प्रतिदर्श के रूप में बी. एड. में प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले हिंदी विषय के 13 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन के उपकरण (Tool of study)- प्रस्तुत अध्ययन हेतु स्वनिर्मित अर्द्धसंरचित साक्षात्कार अनुसूची तथा प्रेक्षण तकनीकी का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का संकलन - आँकड़ों का संकलन सन् 2013-14 में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे बी. एड. के हिंदी विषय के 13 प्रशिक्षणार्थियों को सम्मिलित किया गया है। जिनसे अर्द्धसंरचित साक्षात्कार अनुसूची द्वारा आँकड़ा संकलित किया गया है।

साँख्यिकी विश्लेषण – आँकड़ों के विश्लेषण हेतु आवृत्तियों के मध्य अंतर की सार्थकता के परीक्षण हेतु काई वर्ग-परीक्षण (2-test) का उपयोग किया गया है। आवृत्तियों के मध्य अंतर की सार्थकता को 0.05 विश्वसनीयता स्तर पर परीक्षित किया गया है। साथ ही आँकड़ों को प्रतिशत में भी प्रदर्शित किया गया है।

उद्देश्य 1 – बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के हिंदी अभ्यास शिक्षण के समय पाठ-योजना निर्माण में उत्पन्न समस्या का अध्ययन करना।

उपरोक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतु निम्नलिखित शून्य परिकल्पना निर्मित की गयी है-

$H0_1$ बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों में पाठ-योजना निर्माण के समय समस्या उत्पन्न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों में और समस्या उत्पन्न न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों के मध्य संबंध नहीं है।

उक्त शून्य परिकल्पना का सांख्यिकीय विश्लेषण करके संबंध ज्ञात करने हेतु *काई-वर्ग* (χ^2) परीक्षण किया गया है। प्राप्त आँकड़ों का परिणाम सारणी-1 में प्रस्तुत है।

सारणी 1

	पाठ-योजना निर्माण में समस्या उत्पन्न होने वाले प्रशिक्षणार्थी	*पाठ-योजना निर्माण में समस्या उत्पन्न न होने वाले प्रशिक्षणार्थी*	
fo	11	2	
fe	6.5	6.5	χ^2= 6.24*
Fo-fe	4.50	– 4.50	
$(fo-fe)^2$	20.25	20.25	
$(fo-fe)^2$ / fe	3.12	3.12	

*0.05 स्तर पर सार्थक

व्याख्या- सारणी 1 से यह ज्ञात हुआ कि गणना द्वारा प्राप्त काई-वर्ग परीक्षण का मान (6.24) है जो कि सारणी मान (3.841) से अधिक है। अत: शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की गयी। अतएव इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पाठ-योजना निर्माण में व्यावहारिक समस्या उत्पन्न होने और व्यावहारिक समस्या उत्पन्न न होने के मध्य संबंध है। इसके पीछे निम्न कारण हो सकते हैं। हिंदी विषय के शुद्ध ज्ञान का अभाव, मात्रात्मक त्रुटि की समस्या एवं व्याकरण की समस्या, वर्तनी उच्चारण एवं लेखन की समस्या। पद्य पाठ-योजना में सौन्दर्यानुभूति एवं भावानुभूति प्रकार के प्रश्नों को बनाने की समझ का अभाव एवं तुलनात्मक प्रश्न के निर्धारण की समस्या। साथ ही कठिन्य निवारण में तथा कविता के सस्वर वाचन में भी समस्या हो सकती हैं। ये सभी ऐसे कारण हैं जिनसे पाठ-योजना निर्माण में समस्या का उत्पन्न होना स्वाभाविक है। अभ्यास शिक्षण से पूर्व विषय-शिक्षण का न पढ़ाया जाना भी सबसे बड़ा कारण हो सकता है। साथ ही जिन प्रशिक्षणार्थियों को यह समस्या नहीं आई उनका हिंदी विषय का ज्ञान ठीक हो सकता है।

उद्देश्य 2 – बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के हिंदी अभ्यास शिक्षण के समय प्रस्तावना प्रश्न बनाने में उत्पन्न समस्या का अध्ययन करना।

हिंदी अभ्यास शिक्षण के समय प्रस्तावना प्रश्न बनाने में शत-प्रतिशत् प्रशिक्षणार्थियों के समक्ष व्यवहारगत समस्या उत्पन्न हुई। इसका कारण प्रशिक्षणार्थियों में प्रस्तावना प्रश्न से संबंधित पूर्वज्ञान का न होना, एक अध्याय से दो-तीन पाठ योजनाओं का निर्माण करना हो सकता है। यह भी हो सकता है कि सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास के समय इसे ठीक से समझ ही न पाए हों।

उद्देश्य 3 – बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के हिंदी अभ्यास शिक्षण के समय व्याख्या लिखने और व्याख्या करने में उत्पन्न समस्या का अध्ययन करना।

उपरोक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतु निम्नलिखित शून्य परिकल्पकना निर्मित की गयी है –

$H0_2$ बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों में हिंदी अभ्यास शिक्षण के समय व्याख्या लिखते और व्याख्या करते समय समस्या उत्पन्न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों में और समस्या उत्पन्न न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों के मध्य संबंध नहीं है।

उक्त शून्य परिकल्पना का सांख्यिकीय विश्लेषण करके संबंध ज्ञात करने हेतु काई–वर्ग (χ^2) परीक्षण किया गया है। प्राप्त आँकड़ों का परिणाम सारणी–2 में प्रस्तुत है –

आधार पर यह कहा जा सकता है कि बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों में व्याख्या लिखते एवं व्याख्या करते समय व्यावहारिक समस्या उत्पन्न होने और समस्या उत्पन्न न होने के मध्य संबंध नहीं है। इसका कारण प्रशिक्षणार्थियों द्वारा पूर्व में प्राइवेट विद्यालयों में शिक्षण कार्य करना हो सकता है। क्योंकि कई प्रशिक्षणार्थी ऐसे थे जिन्होंने शिक्षण कार्य करना स्वीकार किया। साथ ही वर्तमान की उच्च स्तर की कक्षाओं में व्याख्यान विधि (Lecture Method) द्वारा शिक्षण कार्य का होना भी हो सकता है।

उद्देश्य 4 – बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के हिंदी अभ्यास शिक्षण के समय कक्षा में अनुशासन बनाए रखने में उत्पन्न समस्या का अध्ययन करना।

सारणी 2

	व्याख्या लिखते और व्याख्या करते समय समस्या उत्पन्न होने वाले प्रशिक्षणार्थी	*व्याख्या लिखते और व्याख्या करते समय समस्या उत्पन्न न होने वाले प्रशिक्षणार्थी*	
fo	9	4	
fe	6.5	6.5	
Fo-fe	2.50	– 2.50	χ^2= 1.92*
$(fo-fe)^2$	6.25	6.25	
$\frac{(fo-fe)^2}{fe}$	.96	.96	

*0.05 स्तर पर सार्थक नहीं

व्याख्या– सारणी 2 से यह ज्ञात हुआ कि गणना द्वारा प्राप्त काई–वर्ग परीक्षण का मान (1.92) है जो कि सारणी मान (3.841) से कम है। अत: शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गयी। अतएव इसके उपरोक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतु निम्नलिखित शून्य परिकल्पना निर्मित की गयी है।

$H0_3$ बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों में हिंदी अभ्यास शिक्षण के समय कक्षा में अनुशासन बनाए रखने

में समस्या उत्पन्न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों में और समस्या उत्पन्न न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों के मध्य संबंध नहीं है।

उक्त शून्य परिकल्पना का सांख्यिकीय विश्लेषण करके संबंध ज्ञात करने हेतु काई-वर्ग (χ^2) परीक्षण किया गया है। प्राप्त आँकड़ों का परिणाम सारणी-3 में प्रस्तुत है –

शिक्षण कार्य करना हो सकता है। साथ ही सेवारत् शिक्षकों द्वारा पाठ्य-वस्तु (Syllabus) कम पढ़ाना भी हो सकता है, क्योंकि जिन सरकारी विद्यालयों पर प्रशिक्षण का कार्य कराया गया वहाँ अध्यापक-छात्र अनुपात में काफी अंतर था। साथ ही छोटी कक्षा होना भी इसका कारण हो सकता है।

सारणी 3

	कक्षा में अनुशासन बनाये रखने में समस्या उत्पन्न होने वाले प्रशिक्षणार्थी	*कक्षा में अनुशासन बनाये रखने में समस्या उत्पन्न न होने वाले प्रशिक्षणार्थी*	
fo	7	6	
fe	6.5	6.5	χ^2= 0.08*
Fo-fe	.50	– .50	
$(fo-fe)^2$	.25	.25	
$\frac{(fo-fe)^2}{fe}$	.04	.04	

*0.05 स्तर पर सार्थक नहीं

व्याख्या – सारणी संख्या 3 से यह ज्ञात हुआ कि गणना द्वारा प्राप्त काई-वर्ग परीक्षण का मान (00.08) है जो कि सारणी मान (3.841) से कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गयी। अतएव इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में कक्षा में अनुशासन बनाने और अनुशासन न बनाने के मध्य संबंध नहीं है। इसका कारण प्रशिक्षणार्थियों द्वारा पाठ्यचर्या (Course of study) को रुचिकर बनाकर व्याख्या करना तथा शिक्षण सहायक सामग्री के सहयोग से

उद्देश्य 5 – बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के हिंदी अभ्यास शिक्षण के समय शिक्षण कार्य में आत्मविश्वास होने में उत्पन्न समस्या का अध्ययन करना।

उपरोक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतु निम्नलिखित शून्य परिकल्पना निर्मित की गयी है।

$H0_4$ बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में हिंदी अभ्यास शिक्षण के समय शिक्षण के समय शिक्षण कार्य में आत्मविश्वास होने में समस्या उत्पन्न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों में और समस्या उत्पन्न न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों के मध्य संबंध नहीं है।

उक्त शून्य परिकल्पना का सांख्यिकीय विश्लेषण करके संबंध ज्ञात करने हेतु काई-वर्ग (χ^2) परीक्षण किया गया है। प्राप्त आँकड़ों का परिणाम सारणी-4 में प्रस्तुत है –

पकड़ तथा शिक्षण सहायक सामग्री के साथ पढ़ाना हो सकता है। प्रशिक्षणार्थियों ने स्वीकार किया कि शिक्षण कार्यक्रम संपन्न होते-होते उनके आत्मविश्वास में सकारात्मक वृद्धि हुई।

सारणी 4

	शिक्षण कार्य में आत्मविश्वास होने में समस्या उत्पन्न होने वाले प्रशिक्षणार्थी	*शिक्षण कार्य में आत्मविश्वास होने में समस्या उत्पन्न न होने वाले प्रशिक्षणार्थी*	
fo	10	3	χ^2= 3.78*
fe	6.5	6.5	
Fo-fe	3.50	– 3.50	
$(fo-fe)^2$	12.25	12.25	
$(fo-fe)^2$ / fe	1.89	1.89	

*0.05 स्तर पर सार्थक नहीं

व्याख्या– सारणी 4 से यह ज्ञात हुआ कि गणना द्वारा प्राप्त काई-वर्ग परीक्षण का मान (3.78) है जो कि सारणी मान (3.841) से कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गयी। अतएव इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण कार्य में आत्मविश्वास होने में समस्या उत्पन्न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों में और समस्या उत्पन्न न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों के मध्य संबंध नहीं है। यद्यपि 76.92% प्रशिक्षणार्थियों ने समस्या होने की बात स्वीकार की है तथापि उनका आत्मविश्वास स्तर जल्दी ही नियंत्रण में हो गया होगा। इसका कारण प्रशिक्षणार्थियों द्वारा पूर्व में शिक्षण कार्य किया जाना तथा छोटी स्तर की कक्षा का होना, साथ ही विषय-वस्तु पर

उद्देश्य 6 – बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के हिंदी अभ्यास शिक्षण के समय शिक्षण सहायक सामग्री बनाने और उनका प्रयोग करने में उत्पन्न समस्या का अध्ययन करना।

उपरोक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतु निम्नलिखित शून्य परिकल्पना निर्मित की गयी है।

$H0_5$ बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में हिंदी अभ्यास शिक्षण के समय शिक्षण सहायक सामग्री बनाने और उनका प्रयोग करने में समस्या उत्पन्न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों में और समस्या उत्पन्न न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों के मध्य संबंध नहीं है।

उक्त शून्य परिकल्पना का सांख्यिकीय विश्लेषण करके संबंध ज्ञात करने हेतु काई-वर्ग

(χ^2) परीक्षण किया गया है। प्राप्त आँकड़ों का परिणाम सारणी–5 में प्रस्तुत है –

सारणी 5

	शिक्षण सहायक सामग्री बनाने और उनका प्रयोग करने में समस्या उत्पन्न होने वाले प्रशिक्षणार्थी	*शिक्षण सहायक सामग्री बनाने और उनका प्रयोग करने में समस्या उत्पन्न न होने वाले प्रशिक्षणार्थी*	
fo	10	3	χ^2= 3.78*
fe	6.5	6.5	
Fo-fe	3.50	– 3.50	
$(fo-fe)^2$	12.25	12.25	
$\frac{(fo-fe)^2}{fe}$	1.89	1.89	

*0.05 स्तर पर सार्थक नहीं

व्याख्या– सारणी 5 से यह ज्ञात हुआ कि गणना द्वारा प्राप्त काई–वर्ग परीक्षण का मान (3.78) है जो कि सारणी मान (3.841) से कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गयी। अतएव इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण सहायक सामग्री बनाने और उनका प्रयोग करने में समस्या उत्पन्न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों तथा शिक्षण सहायक सामग्री बनाने और उनका प्रयोग करने में समस्या उत्पन्न न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों के मध्य संबंध नहीं है। यद्यपि केवल 23.08% प्रशिक्षणार्थियों ने समस्या न होने की बात स्वीकार की है तथापि शेष प्रशिक्षणार्थियों ने यथा शीघ्र शिक्षण सहायक सामग्री के निर्माण पर विशेष ध्यान दिया और उनकी समस्या हल हो गयी हो, ऐसा हो सकता है। इसका अन्य कारण प्रशिक्षणार्थियों को निर्देश था कि पाठ्यचर्या को अधिगमयुक्त बनाने के लिए शिक्षण सहायक सामग्री अवश्य लाएँ, और इस निर्देश का पालन प्रशिक्षणार्थियों ने किया भी। जिसका परिणाम हुआ कि उनकी कक्षाएँ प्रभावपूर्ण होने लगीं और उनके आत्मविश्वास में वृद्धि हुई।

सारणी–6 में प्रशिक्षणार्थियों की समस्याओं का विवरण प्रतिशतवार प्रस्तुत किया गया है –

सारणी-6

	पाठ-योजना निर्माण में समस्या	*प्रस्तावना प्रश्न बनाते समय समस्या*	*व्याख्या लिखते और व्याख्या करते समय समस्या*	*कक्षा में अनुशासन बनाए रखने में समस्या*	*शिक्षण कार्य में आत्मविश्वास होने में समस्या*	*शिक्षण सहायक सामग्री बनाने और उनका प्रयोग करने में समस्या*
समस्या उत्पन्न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों का प्रतिशत	84.62%	100%	69.23%	53.85%	76.92%	76.92%
समस्या उत्पन्न न होने वाले प्रशिक्षणार्थियों का प्रतिशत	15.38%	00.00%	30.77%	46.15%	23.08%	23.08%

परिणाम- अध्ययन के निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए हैं।

उपरोक्त सारणी के अवलोकन के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि-

1. पाठ-योजना निर्माण में 84.62% प्रशिक्षणार्थियों को समस्या उत्पन्न हुई जबकि 15.38% प्रशिक्षणार्थियों को समस्या उत्पन्न नहीं हुई।
2. शत-प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों को प्रस्तावना प्रश्न बनाते समय समस्या उत्पन्न हुई।
3. व्याख्या लिखते और व्याख्या करते समय 69.23% प्रशिक्षणार्थियों को समस्या का सामना करना पड़ा।
4. कक्षा में अनुशासन बनाये रखने में लगभग आधे से ज़्यादा प्रशिक्षणार्थियों को समस्या हुई।
5. शिक्षण कार्य में आत्मविश्वास होने में कमी की समस्या केवल 23.08% प्रशिक्षणार्थियों को ही हुई।
6. 76.92 प्रतिशत प्रशिक्षुओं को शिक्षण सहायक सामग्री बनाने और उनका प्रयोग करने में समस्या आयीं।

काई-वर्ग (χ^2) परीक्षण द्वारा जहाँ केवल पाठ-योजना का निर्माण में सार्थक संबंध प्राप्त हुए हैं वहीं आत्मविश्वास के साथ शिक्षण करने तथा शिक्षण सहायक सामग्री बनाने एवं प्रयोग करने में, व्याख्या लिखने एवं व्याख्या करने तथा कक्षा में अनुशासन बनाये रखने की समस्या में सार्थक संबंध नहीं पाया गया है। प्रस्तावना प्रश्न बनाने में सभी प्रशिक्षणार्थियों को समस्या का सामना करना पड़ा।

निष्कर्ष- प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि हिंदी विषय के अभ्यास शिक्षण के समय अधिकांश प्रशिक्षणार्थियों को समस्या आयी। यह भी कहा जा सकता है कि पाठ-योजना पूर्ण रूप से तैयार करने में प्रस्तावना प्रश्न बनाते समय उन्हें सर्वाधिक समस्या का

सामना करना पड़ा। प्रशिक्षणार्थियों ने इस बात को स्वीकार किया है कि अभ्यास शिक्षण के सम्पन्न होते-होते उनके आत्मविश्वास में सकारात्मक वृद्धि हुई। प्रस्तुत अध्ययन में व्याख्या करने और कक्षा में अनुशासन बनाने, आत्मविश्वास के साथ शिक्षण करने तथा शिक्षण सहायक सामग्री बनाने और उनका प्रयोग करने में सार्थक संबंध नहीं पाया गया। अधिकांश प्रशिक्षणार्थियों ने प्राइवेट विद्यालयों एवं कोचिंग संस्थानों में शिक्षण कार्य करना स्वीकार किया है जो इसके सापेक्ष है।

देश में प्राथमिक विद्यालयों में देखने में आसान लगने वाली हिंदी में सीखने के लिए अपेक्षाकृत अधिक परिश्रम की आवश्यकता है। यह सुधार तो प्राथमिक स्तर से ही होना चाहिए। प्रशिक्षणार्थियों के समक्ष जो समस्याएँ आ रहीं हैं उनमें तो कुछ संस्थागत हैं, यथा-संस्थान में शैक्षिक वातावरण का अभाव, आधारभूत सुविधाओं का अभाव आदि। अध्यापकों में कार्य संतुष्टि (Job Satisfaction) नहीं है। योग्य और कर्मठ प्रशिक्षकों की कमी होती जा रही है। प्रशिक्षणार्थियों में भी रूचि का अभाव पाया जाता है। ऐसे वातावरण में आदर्श एवं योग्य अध्यापक तैयार करना अत्यन्त दुष्कर कार्य है।

अत: निष्कर्ष रूप में यह कह सकते हैं कि प्रशिक्षण से पूर्व विषय शिक्षण की कक्षाएँ नियमित एवं पूर्ण रूप से संचालित करना, साथ ही सूक्ष्म-शिक्षण का विधिवत् अभ्यास कराना, तत्पश्चात् पर्याप्त अभ्यास शिक्षण, पूर्व सेवा शिक्षक की गुणवत्ता वृद्धि का स्रोत बन सकता है। अभ्यास शिक्षण राष्ट्रीय प्रभाव बढ़ाने के लिए आवश्यक है, यह व्यक्तित्व, व्यावसायिक कौशलों, ज्ञान और प्रशिक्षण का समन्वय है तथा अन्तहीन यात्रा के लिए ईंधन है। शिक्षा शास्त्रियों एवं अभ्यास प्रशिक्षकों का यह उत्तरदायित्व है कि वे इस अंतहीन ईंधन को तैयार करते रहें।

समाधान- बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के हिंदी अभ्यास शिक्षण से संबंधित व्यवहारगत समस्याओं के संभावित समाधान निम्नवत् हैं।

1. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को हिंदी भाषा की सामान्य जानकारी विषय शिक्षण से पहले प्रदान की जाए।
2. शिक्षण उपागम (Approach) निश्चित किये जाएँ।
3. विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में शिक्षण कौशलों की संख्या निर्धारण तथा अभ्यास की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की जाए।
4. प्रशिक्षण संस्थानों में आधारभूत सुविधाएँ उपलब्ध करायीं जाएँ।
5. प्रशिक्षण संस्थानों में योग्य सहायक आचार्यों की नियमित नियुक्ति की जाए।
6. शिक्षक-प्रशिक्षकों के समक्ष ऐसे मानदंड प्रस्तुत किए जाएँ जिससे वे प्रशिक्षण कार्य को अपनी नैतिक ज़िम्मेदारी समझें।
7. बी.एड. प्रशिक्षुओं की उपस्थिति कम से कम 80% निश्चित की जाए।
8. शिक्षक-प्रशिक्षक संस्थानों की निश्चित अवधि में योग्य एवं ईमानदार निरीक्षकों से निरीक्षण कराया जाए।
9. देश में शिक्षा की समान पद्धति अपनायी जाए।
10. विद्यालय प्रशासन भी भावी अध्यापकों का सहयोग करे।
11. भावी अध्यापकों द्वारा किये गये अभ्यास की प्रतिपुष्टि दी जाये जिससे वे अगली कक्षा में अच्छा प्रदर्शन कर सकें।

शैक्षिक निहितार्थ – प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट है कि यदि हिंदी विषय के विद्यार्थियों को सर्वप्रथम विशेष उपचारात्मक शिक्षण की वयवस्था की जाए तो वर्तनी और वाचन की समस्या स्वत: ही समाप्त हो जाएगी। उसके बाद विषय शिक्षण एवं सूक्ष्म शिक्षण कराया जाए। साथ ही सभी कौशलों की समुचित तैयारी कराकर ही अभ्यास शिक्षण हेतु भेजा जाए तथा सही तरीके से मूल्यांकन किया जाए तो एक बेहतर भविष्य की नींव रखी जा सकती है।

परिसीमन – प्रस्तुत अध्ययन में हेमवतीनन्दन बहुगुणा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय खटीमा, उधमसिंह नगर, उत्तराखंड (बी. एड. विभाग) के हिंदी विषय के छात्राध्यापकों को ही सम्मिलित किया गया है।

संदर्भ

गुप्ता, एस. पी. 2007. *व्यवहारपरक विज्ञानों में सांख्यिकीय विधियाँ.* इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन.

_____. 2008. *आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन.* इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन.

पाण्डेय, आर. एस. 2010. *हिंदी शिक्षण.* अग्रवाल पब्लिकेशन्स्, आगरा.

रस्तोगी, गोपाल कृष्ण व अन्य. 1998. *मातृभाषा हिंदी शिक्षण.* राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

राय, अनिरुद्ध (संपादक). 1996. *हिंदी शिक्षण पाठ योजनाएँ.* राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

सिंह, ए. के. 2005. *मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ.* पटना, भारती भवन, पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स.

सिंह, एस. 2007. हिंदी शिक्षण. इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस मेरठ.

Bharagava, A. 2009. Teaching practice for student-teachers of B.Ed. programme: Issues, predicaments and suggestions. *Turkish.*

Kerlinger, F. N. 2000. *Foundations of behavioral research.* New Delhi: Surjeet Publication.

http://www.iojes.net/userfiles/article/iojes_319.pdf

http://www.mcser.org/journal/index.php/mjss/article/download/2663/2631

http://www.voiceofresearch.org/doc/mar-2013/mar-2013_5.pdf

Online Journal of Distance Education. 10(2):1—7.